Research Reinforcement | A Peer Reviewed International Refereed Journal | ISSN 2348-3857
Vol. 11, Issue 2 | November 2023 - April 2024 | pp. 53-56

16वें राजस्थान विधानसभा निर्वाचन : राज नहीं रिवाज रहा कायम

डॉ. गजेन्द्र सिंह

सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राजस्थान)

शोध सारांश

भारत संसदीय शासन प्रणाली वाला लोकतंत्रात्मक गणराज्य है। देश के विशाल आकार तथा विविधता के कारण संघात्मक शासन प्रणाली को अपनाया गया है। संघ में संसद तथा राज्य विधानमंडलों के निर्वाचन प्रति पांच वर्ष में होते हैं। 16वें राजस्थान विधानसभा चुनाव ने राज्य की राजनीति में महत्वपूर्ण परिवर्तन किए हैं। विधानसभा निर्वाचनों में सत्ताधारी दल कांग्रेस की हार हुई एवं विपक्षी भाजपा विजयी हुई। भाजपा की जीत ने राज्य में एक नई राजनीतिक दिशा को जन्म दिया है, जबकि कांग्रेस की हार परम्परा का बरकरार रहना साबित हुई क्योंकि लगातार छठे निर्वाचन में मतदाताओं ने सत्ताधारी दल में परिवर्तन किया। कांग्रेस की हार नेतृत्व, एंटी इनकंबैन्सी, संगठन का कमजोर होना, आर्थिक संसाधनों की समस्या, शहरी व सवर्ण वोटरों का छिटकना, कल्याणकारी योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन न होना, धर्म पर वोट पड़ना, जैसे कारणों से हुई। यह शोध पत्र चुनाव के महत्वपूर्ण पहलुओं और परिणामों का संक्षिप्त विश्लेषण प्रस्तुत करता है, ताकि राजस्थान के वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य को समझने में सहायक सिद्ध हो सके।

संकेताक्षर—*संसदीय प्रणाली, एंटीइनकंबैन्सी, संगठन, संसाधन, कल्याणकारी योजनाएँ, नेतृत्व*

प्रस्तावना

भारत लोकतान्त्रिक गणराज्य है। शासन की संसदीय प्रणाली को संविधान निर्माताओं ने देश की विविधता एवं आवश्यकतानुसार चुना। भारत में संघात्मक शासन प्रणाली को अपनाया गया। इस प्रणाली में केन्द्र के साथ-साथ राज्यों के पास भी संवैधानिक शक्तियाँ पायी जाती हैं। संघात्मक प्रणाली के तहत ही देश में संसद एवं विधानसभाओं का अस्तित्व पाया जाता है जहां समय-समय पर होने वाले चुनाव विधायिका व कार्यपालिका का गठन करते हैं। देश में 17 लोकसभा निर्वाचन हो चुके हैं। प्रत्येक राज्य विधानसभा में भी प्रत्येक पांच वर्ष बाद निर्वाचन होते हैं।

राजस्थान में प्रथम विधानसभा निर्वाचन 1952 में सम्पन्न हुए। तब से लेकर 2023 तक 16 विधानसभा चुनाव सम्पन्न हो चुके हैं। 1952, 1957, 1962, 1967, 1972 अर्थात लगातार पांच विधानसभा निर्वाचनों में कांग्रेस पार्टी ने सरकार बनायी। इस दौरान मोहनलाल सुखाड़िया 1954 से 1971 तक लगभग 17 वर्ष मुख्यमंत्री रहे। 1977 के छठे विधानसभा निर्वाचन में पहली बार राजस्थान में गैर कांग्रेसी सरकार बनी जिसके मुखिया भैरोसिंह शेखावत मुख्यमंत्री बने। 1980 के सातवें विधानसभा निर्वाचन में पुनः कांग्रेस सरकार बनी जो 1985 के आठवें निर्वाचन में भी बरकरार रही। 1990 के 9वें विधानसभा चुनाव में राष्ट्रीय मुद्दों ने राजस्थान को भी प्रभावित किया तथा राजस्थान में भी बोफोर्स घोटाले का मतदाताओं पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा। 9वें निर्वाचन में भाजपा एवं जनता दल ने मिलकर सरकार बनाई। दिसम्बर 1992 में बाबरी मस्जिद विध्वंस के बाद यू.पी., एम.पी., राजस्थान, हिमाचल प्रदेश की भाजपा सरकारों को साम्प्रदायिकता फैलाने के आरोपों के आधार पर बर्खास्त कर दिया गया। राष्ट्रपति शासन के बाद 1993 में

दसवीं विधानसभा के लिए निर्वाचन हुये। इस बार पुनः जनता ने भाजपा-जनता पार्टी को सत्ता सौंपी। 1998 में ग्यारहवीं विधानसभा-निर्वाचन सम्पन्न हुये जिनमें कांग्रेस पार्टी ने प्रचंड बहुमत हासिल किया। 200 में से 153 सीटे कांग्रेस ने प्राप्त की। 21वीं सदी के प्रथम एवं 12वीं विधानसभा निर्वाचन 2003 में सम्पन्न हुये। इनमें राजस्थान के इतिहास में पहली बार पूर्ण बहुमत से भाजपा सरकार बनी एवं प्रथम महिला मुख्यमंत्री, वसुंधरा राजे बनीं। 2008 में तेरहवीं विधानसभा चुनावों में पुनः कांग्रेस सरकार बनी व दोबारा अशोक गहलोत मुख्यमंत्री बनें। 2013 के चौदहवें निर्वाचन में राज्य विधानसभा में पुनः सत्ता परिवर्तन हुआ एवं भाजपा ने 163 सीटे प्राप्त कर अब तक सर्वाधिक विधायक जीतने का रिकार्ड बनाया। 2018 के पन्द्रहवें विधानसभा निर्वाचन में फिर एक बार सत्ता परिवर्तन हुआ एवं कांग्रेस सरकार बनी जिसमें अशोक गहलोत ने तीसरी बार मुख्यमंत्री पद की शपथ ली। नवम्बर-दिसम्बर 2023 में 16वें विधानसभा निर्वाचन हुये जिसमें राजस्थानी सत्ता परिवर्तन का रिवाज बरकरार रहा। 200 विधानसभा सीटों में से 115 स्थान प्राप्त कर भारतीय जनता पार्टी ने सरकार बनायी। अबकि बार भाजपा ने प्रादेशिक नेतृत्व में परिवर्तन किया तथा भजनलाल शर्मा को मुख्यमंत्री बनाया।

16वें विधानसभा निर्वाचनों में कांग्रेस की हार के कई कारण रहे। राजनीतिक गलियारों में अब एक कहावत हो गई है कि राजस्थान में प्रत्येक पांच वर्ष में सत्ता बदलती है। पिछले लगातार छः निर्वाचनों से यह क्रम चल रहा है। मतदाता बेहतर नेतृत्व, सुशासन एवं कल्याणकारी राज्य बनाने की इच्छा से सत्ताधारी दल बदल देता है। राजस्थान कांग्रेस में नेतृत्व को लेकर कलह रही है। यहां बड़े नेताओं में अशोक गहलोत, सी.पी. जोशी, सचिन पायलेट, रामेश्वर डूडी का नाम आता है। पहले विवाद अशोक गहलोत तथा सी.पी. जोशी में रहता था मगर 2013 विधानसभा निर्वाचन में हार तथा 2014 लोकसभा चुनाव में सभी लोकसभा सीट हारने के बाद युवा सचिन पायलेट को प्रदेश अध्यक्ष बनाया गया तथा रामेश्वर डूडी को विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष बनाया गया। पायलट ने हार से पस्त, निराश कांग्रेस में जान फूंकी तथा लगातार कई आन्दोलन किये। पायलेट ने युवाओं को बड़ी संख्या में कांग्रेस पार्टी से जोड़ा एवं रामेश्वर डूडी ने विधानसभा में लगातार सरकार को घेरा।

इस वातावरण में 2018 के विधानसभा निर्वाचन हुये जिनमें कांग्रेस पार्टी ने सरकार बनायी। मुख्यमंत्री बनाने की जब बारी आयी तो पार्टी आलाकमान ने अशोक गहलोत को सचिन पायलेट पर प्राथमिकता दी। इस प्रकरण से सचिन पायलेट तथा उसके समर्थक विधायकों में असन्तुष्टी उत्पन्न हुई। समस्या उत्पन्न हुई उस समय जब अशोक गहलोत ने पॉवर कोरिडोर से पायलेट तथा उसके समर्थकों को बाहर करना प्रारंभ किया। कुछ समय बाद सरकार में उनके काम होने बंद हो गये, फलस्वरूप सचिन पायलेट, समर्थक विधायकों के साथ रिसोर्ट चले गये। सरकार गिरने की नौबत हो गई मगर निर्दलियों तथा बसपा प्रत्यासियों की सहायता से सरकार बच गई। कुछ समय बाद पायलेट अपने समर्थक विधायकों के साथ वापस आ गये मगर पायलट-गहलोत गुट बन गये थे। दोनों गुटों में एक-दूसरे गुटों के प्रति असंतोष व अविश्वास रहा। यह सब विधानसभा निर्वाचन तक चला, दोनों गुट अपने-अपने समर्थकों को ही जिताना चाह रहे थे, पूरे चुनाव से उन्हें ज्यादा मतलब नहीं था। इस कारण बिखरा हुआ कांग्रेस नेतृत्व भाजपा का मुकाबला नहीं कर पाया जिसका परिणाम कांग्रेस की करीबी हार के रूप में सामने आया।

राजस्थान राज्य में गुर्जर जाति के वोट 5 से 7 प्रतिशत के आसपास है। लगभग 30 विधानसभाओं में ये निर्णायक की स्थिति में होते हैं। कांग्रेस 7 से 10 एवं भाजपा भी लगभग इतने ही टिकट गुर्जरों को देती है। 2018 के विधानसभा चुनाव से पहले सचिन पायलेट के कारण गुर्जर वोटों का अधिकतम नम्बर कांग्रेस के पक्ष में गया, इसी कारण भाजपा के टिकट वाले गुर्जर उम्मीदवार भी हार गये। निर्वाचनों में कांग्रेस को सफलता मिली मगर कांग्रेस आलाकमान ने प्रदेश अध्यक्ष सचिन पायलेट की बजाय अशोक गहलोत को मुख्यमंत्री बना दिया। इस निर्णय को गुर्जर जाति ने जातीय अस्मिता से जोड़ा तथा गुर्जरों एवं सचिन पायलेट की पीठ में छूरा घोपने जैसे उपमाए दी गई। गुर्जर राजनीतिक रूप से कांग्रेस से नाराज हुये एवं अगले चुनावों में कांग्रेस को सबक सिखाने की चर्चा होने लगी। 2019 के लोकसभा चुनाव तथा 2023 के विधानसभा चुनावों में गुर्जरों ने कांग्रेस के खिलाफ वोट किया जिसका खामियाजा सत्ता से बाहर होकर कांग्रेस को उठाना पड़ा।

एंटी इन्कम्बैंन्सी सत्ता के विरूद्ध प्राय भारतीय राजनीति में हो जाती है। समाचार पत्र, पत्रिकाओं, नेताओं एवं जनमानस

में चर्चा थी कि सरकार से नाराजगी नहीं है, अशोक गहलोत तथा उनकी योजनाएं अच्छी है, मगर विधायक, मंत्री सही नहीं है, जनता विधायकों से नाराज है। मन्त्रियों की परफारमेंस भी बेहतर नहीं है। आगामी चुनावों में यदि पार्टी को सत्ता में आना है तो बड़ी संख्या में टिकट काटने होंगे। चुनावों से छः माह पूर्व मुख्यमंत्री गहलोत तथा पार्टी आलाकमान भी कह रहा था। आधे टिकट काटे जायेंगे मगर टिकट ज्यादा बदले नहीं गये, फलस्वरूप विधायकों से नाराजगी भारी पड़ी, 20 से ज्यादा मंत्री हार गये। मंन्त्रियों की हार सरकार की हार मानी जाती है।

यह सर्वविदित है कि चुनावों में करोड़ों, अरबों रुपये खर्च होते हैं। यह खर्च उम्मीदवार व्यक्तिगत स्तर पर करता है तो पार्टी केन्द्रीकृत रूप में करती है। पार्टी विज्ञापनों (टीवी, समाचार पत्र, पत्रिका होर्डिंग, सीनेमा हाल, सोशल मीडिया) के साथ-साथ सभा, सम्मेलन, स्टार प्रचारक आदि पर खर्च करती है। यह कहा और माना जाता है कि जो राजनीतिक दल अधिक खर्च करता है वह माहौल को अपने पक्ष में बनाने में काफी आगे हो जाता है। कांग्रेस पार्टी आर्थिक रूप से संसाधनों के अभाव में रही। इलेक्टोरल बांड ज्यादातर भाजपा के पक्ष में जाते हैं। भाजपा के आर्थिक संसाधन कांग्रेस के मुकाबले दस गुणा अधिक रहे। अतः आर्थिक संसाधनों के अभाव में कांग्रेस आक्रामक चुनाव प्रचार नहीं कर पायी। कांग्रेस शहरों में होर्डिंग, बैनर, सीनेमा हॉल विज्ञापन में भी पिछड़ गई।

चुनावों में सफलता प्राप्ति के लिए संगठन का पूर्ण, प्रभावी, समर्पित होना जरूरी है। कांग्रेस पार्टी नेता आधारित पार्टी है जो व्यक्तिगत सम्बन्धों तथा चमत्कारिक नेतृत्व पर चलती है। समस्या कई बार हो जाती है जब वो नेता दल बदल ले या किसी कारण सक्रिय न हो तो उसके अनुयायी भी निष्क्रिय हो जाते हैं। अतः होना यह चाहिये कि संगठन के लोग नेता की अपेक्षा दल के आदर्श, विचारधारा, सिद्धांत, कार्यक्रम में निष्ठा एवं भरोसा रखे। इन विधानसभा निर्वाचनों में कांग्रेस संगठन की निचली कड़िया जैसे बूथ, मंडल, तहसील, विधानसभा यहां तक कि जिला संगठन ईकाई भी निष्क्रिय एवं निस्तेज रही। यदि कहा जाये कि प्रदेश अध्यक्ष की कार्यकारिणी के दो तिहाई सदस्य निष्क्रिय थे तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है। कमजोर, लचर, निष्क्रिय एवं छोटे संगठन से सबसे बड़े प्रदेश में चुनाव जीतना आसान नहीं है। चुनावों के पास आते ही डिजायन बॉक्स नाम की एजेन्सी को कांग्रेस ने हायर किया। इस एजेन्सी की सलाह के आधार पर ही पार्टी विशेषकर मुख्यमंत्री अशोक गहलोत निर्णय लेने लगे। डिजायन बॉक्स ने सभी विधानसभा क्षेत्रों का सर्वे किया, जीतने हारने वाले उम्मीदवारों की सूची तैयार की। चुनावी मुद्दे तय किये, कौन सी योजना लानी है अथवा बंद करनी है सीधे मुख्यमंत्री को रिपोर्ट किया। अर्थात जो कार्य संगठन को करने थे वो प्राइवेट एजेन्सी कर रही थी जिसकी विश्वसनीयता एवं ईमानदारी का कोई भरोसा नहीं था। इस प्रकरण के कारण भी कांग्रेस संगठन पर ध्यान नहीं दिया गया व वह कमजोर पड़ गया।

आर्थिक विकास के आंकड़े हो अथवा कल्याणकारी योजनायें इन सभी को स्वतंत्र नियामकीय संस्थाओं द्वारा सराहा गया था। राजस्थान सरकार की स्वास्थ्य योजना तो भारत सरकार के साथ-साथ यूनीसेफ द्वारा भी प्रोत्साहित की गयी थी, मगर कांग्रेस पार्टी इन अच्छी कल्याणकारी योजनाओं को चुनावी रूप से नहीं भुना पायी। होना यह चाहिये था कि मंत्री, विधायक, कांग्रेसजन इन योजनाओं का जन-जन तक प्रचार कर अपने पक्ष में वोट बनाते। मगर ऐसा करने में वे नाकायमयाब रहे।

भारतीय निर्वाचकीय राजनीति को अगर जातीय राजनीति कहा जाये तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। यहां राजनीतिक दलों के समर्थन एवं जीतने का आधार जातिगत अधिक होता है अर्थात चुनावों में सफलता का बड़ा कारण जातीय समर्थन रहता है। वर्तमान में भाजपा को ब्राह्मण, बनिया, राजपूत अर्थात सवर्णों का लगभग-लगभग पूर्ण समर्थन है वहीं पिछड़ी जातियाँ तथा अनुसूचित जाति तथा जनजातियों में भी भाजपा अपना समर्थन आधार निरन्तर बढ़ा रही है। कांग्रेस को अल्पसंख्यक (मुस्लिम) दलित, आदिवासी वोटर का पसंदीदा माना जाता है। कांग्रेस के द्वारा पिछले कुछ समय से जातिय जनगणना की मांग निरंतर की जा रही है। कुछ राज्यों में जहां कांग्रेस सहयोगी की भूमिका में वहां जातीय जनगणना करवायी गई है अथवा उसके लिए काम प्रारंभ हो गया है। जाति जनगणना को सवर्ण वोटर अपने हितों के विरूद्ध मानता है, क्योंकि संख्या में कम होने के कारण मगर अधिकाधिक संसाधनों पर नियन्त्रण के कारण सवर्णों को भय है कि कहीं पिछड़े, एससी, एसटी, संख्या बल में अधिक है, और वो संख्या बल के आधार पर अधिकाधिक संसाधनों की मांग न करने लगे। यदि आरक्षण, विकास, आदि को संख्या के हिसाब से आवंटित किया गया तो सवर्णों को नुकसान होगा। इसी आधार पर इन

विधानसभा निर्वाचनों में सवर्णों ने तय किया कि कांग्रेस की अपेक्षा भाजपा को अधिकाधिक वोट दिया जाये क्योंकि बीजेपी जातिगत जनगणना के विरोध में है। आंकड़े बताति हैं कि शहरों में जहां सवर्ण वोटरों की अधिकता है भाजपा को एकतरफा वोट मिले। सीएसडीएस के आंकड़े भी सवर्णों को भाजपा के पक्ष में जाने की बात दोहरा रहे हैं।

राजस्थान के कुछेक क्षेत्रों में आरएलपी, एएसपी, बीएपी, वामदलों का ठीक ठाक आधार है। सामाजिक आधार पर देखा जाये तो कांग्रेस एवं इन दलों का आधार एक ही है। चुनाव पूर्व चर्चा चल रही थी कि कांग्रेस इन दलों से गठबंधन करले तो चुनावी लाभ होगा, वोट बटेगा नहीं जिसका फायदा कांग्रेस को तथा नुकसान बीजेपी को होगा। मगर किन्हीं कारणों से गठबंधन नहीं हुआ जिसका खामियाजा इन छोटे दलों तथा कांग्रेस को भुगतना पड़ा। चुनाव के आंकड़े बताते हैं कि भाजपा के मुकाबले कांग्रेस व छोटे दलों के वोट ज्यादा थे व गठबंधन होने पर कांग्रेस गठबंधन को कम से कम बीस सीटों का फायदा होता।

राजस्थान में युवा स्वरोजगार की अपेक्षा सरकारी नौकरी ज्यादा पसंद करते हैं। आरपीएससी सरकारी नौकरी की परीक्षा कराने वाली संवैधानिक संस्था है, इसके सदस्यों की नियुक्ति राज्यपाल सरकार की सलाह पर करते हैं। चुनाव से पहले कुछ सदस्यों को नियुक्त किया गया, उन सदस्यों की नियुक्ति का विरोध बड़े पैमाने पर हुआ। इस विरोध ने युवाओं में सरकार की छवि को नकारात्मक रूप से प्रभावित किया।

मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने चुनाव पूर्व कुछ बयान दिये, इन बयानों का इशारा था कि वो लगातार मुख्यमंत्री बने रहेंगें। मुख्यमंत्री का पद उन्हें नहीं छोड़ रहा है। ऐसे बयानों से पायलट समर्थक उनके खिलाफ पूर्ण आक्रोश से हो गये एवं जनमानस भी कहने लगा कि मुख्यमंत्री से कुर्सी को छुड़ा ही देते हैं। I.N.D.I.A. गठबंधन विपक्ष द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर बनाया गया। इसका उद्देश्य भाजपा के अलावा अन्य वोटो को बिखरने से रोकना था। भाजपा 37 प्रतिशत वोटरों की पसंद थी बाकि 63 प्रतिशत वोटों को एकजुट करने के लिए इंडिया गठबंधन बना। राजस्थान विधानसभा चुनावों में कांग्रेस के अलावा अन्य दल बिना गंभीरता से लड़े। इन दलों का राजस्थान में तालमेल भी नहीं था। अतः बिखरे वोटों का फायदा भाजपा को हुआ।

निष्कर्ष

संक्षेप में कहा जाये तो राजस्थान कांग्रेस की हार के बड़े कारण कांग्रेस में नेतृत्व को लेकर फूट का होना तथा भाजपा में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का स्वयं चुनाव अभियान की कमान संभालना रहा। राजस्थानी जनता का रिवाज बरकरार रहा जहाँ पिछले 6 विधानसभा चुनावों में सत्ता परिवर्तन लगातार हो रहा है। 16वें राजस्थान विधानसभा चुनाव ने राज्य की राजनीति में महत्वपूर्ण परिवर्तन किए हैं। भाजपा की जीत ने राज्य में एक नई राजनीतिक दिशा को जन्म दिया है, जबकि कांग्रेस को अपनी नीतियों और रणनीतियों पर पुनर्विचार करने की आवश्यकता है। आगामी वर्षों में राज्य की राजनीति कैसे बदलती है, यह देखने वाली बात होगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. कुमार, संजय, रॉय, प्रवीण, भारत में मतदान व्यवहार का मापन, सेज पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड, न्यू देल्ही, 2018
2. वैश्य, डॉ. श्रीमती कल्पना, भारतीय लोकतंत्र में मतदान व्यवहार, नवभारत प्रकाशन, देल्ही, 2020
3. गोयल, डॉ. अलका, भारत में मतदान व्यवहार एवं जनादेश, उप्पल पब्लिशिंग हाउस, देल्ही, 2022
4. एचटीटीपीएसः//डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू डॉट ईसीआई.जीओवी.इन
5. एचटीटीपीएसः//डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू.इण्डियाटुडे.इन
6. एचटीटीपीएसः//डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू.हिन्दुस्तान टाइम्स.कॉम
7. एचटीटीपीएसः//डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू.बीबीसी.हिन्दी.कॉम
8. एचटीटीपीएसः//डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू.सीपीपीआर.इन/आर्टिकल्स/इलेक्शन-राजस्थान
9. एचटीटीपीएसः//डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू.फ्रीप्रेसजर्नल्स.इन/इण्डिया/राजस्थान-असेम्बली-इलेक्शन्स-2023
10. एचटीटीपीएसः//डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू.भास्कर.कॉम/ईपेपर/डीटेल-पेज/जयपुर